SCERT, Raipur

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान – स्थापना, भूमिका एवं विभिन्न प्रकोष्ठों के कार्य

प्रस्तुति –

शिक्षक शिक्षा प्रकोष्ठ

SCERT, Raipur

डाइट की स्थापना एवं भूमिका

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में डाइट जैसी संस्था की परिकल्पना की गई।
- शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर एन.सी.ई.आर.टी. व नीपा तथा राज्य स्तर पर एस.सी.ई.आर.टी. जैसी संस्थाएं कार्य कर रही है। जिले के स्तर पर कार्य करने हेतु सपोर्ट सिस्टम के तीसरे सोपान के रूप में डाइट की स्थापना हुई।
- शिक्षा नीति में ऐसी परिस्थितियां बनाने की बात कही गई है जिससे अध्यापकों को निर्माण और सृजन की ओर बढ़ने की प्रेरणा मिले। राज्य से नीचे कुछ प्रारभिंक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाएं हैं, जिनकी गतिविधियां प्री–सर्विस टीचर एजुकेशन तक सीमित है। इससे आगे बढ़कर सेवाकालीन शिक्षकों का सतत् सक्षमीकरण एवं शिक्षा के लिए लगातार अकादमिक सपोर्ट डाइट की स्थापना के पीछे मुख्य उद्धेश्य था।

डाइट की स्थापना एवं भूमिका

मिशनः–

- प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण एवं राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के अंर्तगत 15 से 35 आयु समूह के लिए कार्यात्मक साक्षरता के विशेष संदर्भ में प्रारंभिक शिक्षा एवं प्रौढ़ साक्षरता के लिए बनाई गई रणनीति व कार्यक्रमों की सफलता के लिए ग्रास रूट लेवल पर अकादमिक व रिसोर्स सपोर्ट प्रदान करना।

डाइट के प्रकोष्ठ

1. सेवापूर्व प्रशिक्षण शाखा
2. जिला स्रोत इकाई
3. सेवाकालीन प्रशिक्षण, क्षेत्र परीक्षण एवं नवाचार समन्वय
4. कार्यानुभव
5. पाठ्यक्रम सामग्री निर्माण एवं मूल्यांकन
6. शैक्षिक प्रौद्योगिकी
7. योजना एवं प्रबंधन

1. सेवापूर्व प्रशिक्षण शाखा

- सेवापूर्व प्रशिक्षण कोर्स प्रारंभिक शिक्षा में पत्रोपाधि 'डिप्लोमा इन एलीमेन्ट्री एजुकेशन' का संचालन।
- विद्यार्थी केन्द्रित उपागम विकसित करना।
- प्रशिक्षण, शिक्षण सहायक सामग्री, क्रियात्मक अनुसंधान की सहायता से व्यक्तित्व विकास।
- शिक्षण कला से संबंधित विभिन्न विधियों एवं अन्य बातें जैसे –बहुकक्षा शिक्षण, पियर ग्रुप ट्यूटोरियल इत्यादि का प्रशिक्षण।
- शालाओं को मनोवैज्ञानिक परामर्श प्रदान करना।
- पिछड़े बालकों से संबंधित विभिन्न समस्याओं पर परामर्श तथा फर्स्ट जनरेशन लर्नर के लिए उपचारात्मक शिक्षण व्यवस्था एवं मार्गदर्शन प्रदान करना।

1. सेवापूर्व प्रशिक्षण शाखा

- शारीरिक एवं मानसिक रुप से दिव्यांग बच्चों की शिक्षण व्यवस्था हेतु मार्गदर्शन।
- संस्था की विभिन्न शाखाओं के कार्यों में सहयोग प्रदान करना। विभिन्न कार्यक्रमों में विषय की आवश्यकता अनुसार सहायता प्रदान करना।
- विज्ञान प्रयोगशाला का रखरखाव, मनोवैज्ञानिक उपकरणों का रखरखाव, दिव्यांग बच्चों के लिए स्रोत कक्षा का निर्माण, कला शिक्षण हेतु कक्ष का निर्माण।
- शारीरिक शिक्षा से संबंधित कार्यक्रमों का सम्पादन करना।
- पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन करना जैसे–भाषण, वाद–विवाद, विज्ञान मेला, दृश्य–श्रव्य सामग्री निर्माण, खेलकूद प्रतियोगिताएं, योग, अन्य क्रियाकलापों का आयोजन।

2. जिला स्रोत इकाई

- डाइट में एवं डाइट के बाहर संचालित विभिन्न कार्यक्रमों की योजना बनाने एवं प्रशिक्षण प्रदान करने में शिक्षा विभाग की सहायता करना।
- निम्नांकित के प्रशिक्षण हेतु स्रोत केन्द्र के रुप में कार्य तथा प्रशिक्षण प्रदान करना– साक्षरता अभियान, समग्र शिक्षा अभियान,
- स्थानीय निकाय पंच–सरपंच का प्रशिक्षण,
- महिला एवं बाल विकास के विभिन्न कार्यक्रम जैसे–आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण' शासन द्वारा संचालित अन्य कार्यक्रमों से संबंधित प्रशिक्षण।
- विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता को बनाये रखने के लिए सतत् मॉनिटरिंग।
- प्रशिक्षणार्थियों का डाटा बेस तैयार करना।
- नोडल संस्था के रूप में संस्था के अन्य विभागों को सहयोग प्रदान करना।

2. जिला स्रोत इकाई

- क्षेत्र से फीडबैक प्राप्त कर शासन द्वारा चलाए जा रहे अन्य शैक्षिक कार्यक्रमों को अकादमिक सहयोग।
- विभिन्न संस्थागत कार्यों के लिए मीडिया की सहायता उपलब्ध कराना।
- शैक्षिक अभियानों हेतु क्रियात्मक अनुसंधान कराना।

3. सेवाकालीन प्रशिक्षण क्षेत्र परीक्षण एवं नवाचार समन्वय

- सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों हेतु शिक्षा विभाग को योजना निर्माण में सहयोग।
- जिला में प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं को पहचानना।
- डाइट में संचालित होने वाले सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम हेतु वार्षिक कैलेण्डर बनाना।
- डाइट के बाहर आयोजित होने वाले सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों हेतु संबंधित विभाग को सहयोग।
- प्राथमिक व पूर्व माध्यमिक प्रधान पाठकों, शिक्षकों, विकासखंड स्रोत समन्वयक एवं संकुल समन्वयक का उन्मुखीकरण।
- डाइट के बाहर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों हेतु स्रोत पुरुषों का उन्मुखीकरण।
- फील्ड से जुड़ी हुई क्रियात्मक अनुसंधानों व क्षेत्रपरीक्षण के लिए एक नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करना तथा प्राप्त निष्कर्षों का समुचित उपयोग करना।
- न्यूज लेटर का प्रकाशन एवं जिलों को उपलब्ध कराना।

4. कार्यानुभव

- स्थानीय आवश्यकता एवं उपयोग की दृष्टि से कार्यानुभव के क्षेत्रों की पहचान करना।
- कार्यानुभव आधारित पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों का आयोजन।
- कम लागत वाली सहायक शिक्षण सामग्री का निर्माण।
- मूल्यांकन हेतु उपकरणों का विकास।
- कार्यानुभव के क्षेत्र में प्रारंभिक शालाओं/शैक्षिक संस्थानों अन्य शालाओं की सहायता।

4. कार्यानुभव

- संस्थान में आयोजित होने वाले सेवापूर्व/विभिन्न सेवाकालीन/अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कार्यानुभव से संबंधित इनपुट प्रदान करना।
- संस्थान के परिसर का सौंदर्यीकरण व स्वच्छता बनाए रखना जैसे–वाटिका का निर्माण, श्रमदान द्वारा खेल के मैदान, सड़कों का निर्माण कराना, संस्था के फर्नीचर का रख–रखाव।
- सामुदायिक सेवा कार्यक्रमों का आयोजन करना। आस–पास में स्थित विभिन्न कार्य केन्द्रों का भ्रमण करना।
- कार्यानुभव हेतु कार्यशालाओं का आयोजन।
- छात्रों के कार्यानुभव से संबंधित विभिन्न हॉवी से संबंधित कार्य विकसित करना।

5. पाठ्यक्रम सामग्री निर्माण एवं मूल्यांकन

- वर्तमान में उपलब्ध सामग्री को अनुकूलित करते हुए स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप नई सामग्री तैयार करना।
- जिले की आवश्यकता के अनुसार विभिन्न विषयों के लिए पाठ्यक्रम एवं पाठ्य सामग्री तैयार करना –स्थानीय भूगोल, लोकगीत, रीति–रिवाज, वन उपज, पेड़–पौधे, मेले, त्यौहार, कृषि उद्योग–धंधे, कला, हाथकरघा, हस्तकला, जातियां, जनजातियां संस्थान आदि।
- स्थानीय बोली में सीखने–सिखाने की सामग्री तैयार करना।
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन हेतु टेकनीक का निर्धारण कर मार्गदर्शन देना।

5. पाठ्यक्रम सामग्री निर्माण एवं मूल्यांकन

- उपचारात्मक शिक्षण कार्य हेतु प्रश्न बैंक, टेस्ट रेटिंग स्कैल, अवलोकन प्रपत्र, निदानात्मक टेस्ट का निर्माण करना।
- विभिन्न विकास कार्यों हेतु जिला स्रोत इकाई की सहायता करना।
- सैम्पल के आधार पर उपलब्धि परीक्षण करना।
- अधिगम प्रतिफल का आकलन। गुणवत्ता संवर्धन हेतु योजना बनाकर कार्य करना।

6. शैक्षिक प्रौद्योगिकी

- जिले के शिक्षकों के लिए कम लागत की सीखने–सिखाने की सामग्री तैयार करना।
- जिला स्रोत इकाई शाखा की मदद करना।
- संस्थान के सभी दृश्य श्रव्य उपकरणों का रख–रखाव।
- कम्प्यूटर का रख–रखाव।
- निर्मित सामग्री व प्रदर्शन हेतु एक प्रदर्शन कक्ष का निर्माण।
- डिजिटल शैक्षिक सामग्री का निर्माण।

6. शैक्षिक प्रौद्योगिकी

- नजदीकी आकाशवाणी केन्द्र से संपर्क स्थापित कर शैक्षिक कार्यक्रमों के प्रसारण की व्यवस्था।
- सेवाकालीन प्रशिक्षणों में ई.टी. हेतु कार्यक्रम समायोजित करना।
- शोध एवं नवाचार हेतु शिक्षकों में रुचि पैदा करना।
- शोध एवं नवाचार हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षणों में इनपुट देना।
- शोध एवं नवचार से संबंधित पत्रिकाएं प्रकाशित करवाना।
- वार्षिक कैलेण्डर में विभिन्न शैक्षिक अध्ययनों हेतु लक्ष्य निर्धारित करना।

7. योजना एवं प्रबंधन

- विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों हेतु जिले का एक डाटा तैयार करना।
- नीतिगत निर्णयों हेतु विभिन्न अध्ययन आयोजित करना जैसे–दर्ज संख्या, ठहराव, नियमित उपस्थिति, तथा अनुसूचित जाति और जनजाति के बच्चों की शिक्षा।
- शिक्षा विभाग को स्कूल मैपिंग, सूक्ष्म नियोजन, संस्थागत योजना, संस्थागत मूल्यांकन में सहयोग।

7. योजना एवं प्रबंधन

- समुदाय की सहभागिता पर आधारित सभी कार्यक्रमों में एक नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करना।
- वार्षिक संस्थागत योजना बनाने हेतु नोडल एजेन्सी के रूप में कार्य करना।
- सभी प्रशिक्षण एवं अन्य कार्यक्रमों में प्लानिंग एण्ड मैनेजमेंट संबंधी इनपुट प्रदान करना।

SCERT, Raipur

धन्यवाद